A3

A4

A5

# दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

## (Hindi Literature)

टेस्ट-2

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2302**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time Allowed: Three Hours* | अधिकतम अंक : 250<br>*Maximum Marks : 250* |
|---|---|

नाम (Name): Vikas Kumar Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 02, 29-06-23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | 8 | 3 | 7 | 6 | 8 | 6 |

## Question Paper Specific Instructions

*Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:*

*There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.*

*Candidate has to attempt FIVE questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 138    टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
**Evaluator (Code & Signatures)** E-51

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
**Reviewer (Code & Signatures)**

Scanned with OKEN Scanner

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हिन्दी साहित्येतिहास को ग्रियर्सन की देन

हिंदी साहित्येतिहास लेखन में जॉर्ज ग्रियर्सन का एक महत्त्वपूर्ण एवं व्यवस्थित योगदान उनकी रचना "द माईन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दर्न हिंदुस्तान" के कारण उल्लेखनीय है।

विशेषताएँ

→ हिंदी के विभिन्न कवियों एवं उनकी रचनाओं का कालक्रमानुसार उल्लेख

→ संस्कृत, प्राकृत जैसी भाषाओं को हिंदी से भिन्न माना।

→ उन्होंने जहाँ भी तथ्यों का प्रयोग किया है, वहाँ उनके स्रोतों के बारे में भी बताया है। यह एक वैज्ञानिकता का आयाम है।

→ उन्होंने हिंदी के विकास को कालखण्डों में बाँटकर लिखा।

(i) चारण काल
(ii) मुगल काल
(iii) 18वीं सदी
(iv) अंग्रेजी काल (अंग्रेजों का शासन काल)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को हिंदी का स्वर्णकाल बताया, जो वर्तमान समय में मान्य है।

→ ग्रियर्सन द्वारा हिंदी साहित्य लेखन का प्रयास प्रमाणिकता के साथ व्यवस्थित रूप से किया गया है।

हालाँकि कुछ त्रुटियाँ विद्यमान हैं:

- उर्दू को हिंदी से भिन्न बताया; जबकि उर्दू का उद्भव हिंदी से ही हुआ है।
- बिहारी के काव्यलेखन को संपूर्ण यूरोप के कवियों से बेहतर बताया है।
- विद्यापति के शृंगारिक काव्य को, भक्तिकाव्य बताया।

समग्र रूप से कुछ त्रुटियाँ इसमें अवश्य हैं; परंतु एक व्यवस्थित एवं प्रमाणिक हिंदी साहित्येतिहास का सबसे बेहतर प्रयास ग्रियर्सन द्वारा किया गया।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) घनानंद की काव्य-भाषा

घनानंद रीतिकालीन काव्य परंपरा के कवि हैं ; वस्तुत: ये दरबारी लेखन नहीं करते थे, अपितु रीतिमुक्त या रीति स्वच्छंद काव्य लेखन करते थे, जो कविता के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति को सूचित करता था।

→ घनानंद ने अपने काव्य में अन्य कवियों की तरह अराजक भाषा का प्रयोग न करके परिमार्जित / विशुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। उनके काव्य में अवधी, बुंदेलखंडी आदि का समायोजन नहीं मिलता है।

→ घनानंद ने काव्य लेखन में अलंकारों का प्रयोग किया है; परंतु इन अलंकारों से काव्य में ग्राह्यता और रोचकता बढ़ी है।

" उजरनि बसि है, हमारि अखियन देखो।"

(विरोधाभास अलंकार)

→ रीतिकाल में घनानंद ही वे कवि हैं, जिन्होंने अभिधा, लक्षणा में अपने काव्य की अभिव्यक्ति की है और साथ ही अपने काव्य में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ घनानंद की काव्य भाषा इतनी स्पष्ट एवं परिमार्जित है कि अप्रस्तुत शब्दों का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

→ इसी आधार पर घनानंद के काव्य को शिल्प और भाषायी दृष्टि से अद्वितीय कहा जाता है।

घनानंद की न केवल भाषा एवं शिल्प दृष्टि अप्रतिम एवं अद्वितीय है; अपितु इनके काव्य की संवेदना दृष्टि भी व्यावहारिक एवं मौलिक प्रतीत होती है, जो दरबारी लेखन न होकर सहज भावों की अभिव्यक्ति है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) मनोवैज्ञानिक कहानी

हिंदी की लेखन शैली धाराओं में गद्य लेखन का इतिहास प्रमुखत: 19 वीं सदी के उत्तरार्ध से माना जाता है।

गद्य की कहानी लेखन शैली को विभिन्न भागों (जैसे: प्रगतिवादी कहानी, मनोवैज्ञानिक कहानी) में बाँटा जा सकता है।

→ मनोवैज्ञानिक कहानी को मूलत: फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद से प्रेरित होकर लिखा गया था।

→ हिंदी में मनोवैज्ञानिक कहानी लेखन के प्रमुख प्रणेता जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय रहे हैं।

→ वस्तुत: प्रेमचंद की कुछ कहानियों में मनोविज्ञान का पुट दिखाई पड़ता है, परंतु इसका विकसित स्वरूप नई कहानी आंदोलन में दिखाई देता है।

→ औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप मध्यवर्ग का उदय, सामाजिक-परिवारिक संस्थना बिखराव, अंतर्मन के द्वन्द्व, अकेलापन, संत्राष इत्यादि कारणों ने मनोवैज्ञानिक कहानी की आधारशिला रखी।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ भारतीय परिप्रेक्ष्य में इन कहानियों में गाँधी का दर्शन, मार्क्स का दर्शन और सार्त्र का अस्तित्ववाद भी कहीं-कहीं नजर आता है।

→ मनोवैज्ञानिक कहानियाँ मुख्यत: अन्तर्मन की दशाओं को उद्घाटित करती है।

→ भाषा बेहद प्रतीकात्मक है, तो साथ ही विश्लेषणात्मक शैली को समाहित किए हुए है।

→ चरित्रों की संख्या सीमित है। कई कहानी तो आत्मचिंतन शैली में लिखी गई है। (जैसे - मेरा दुश्मन)

• मनोवैज्ञानिक कहानियों मे प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थ के स्थान पर मानसिक यथार्थ को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया, जो चिंतन के नज़रिए से अद्वितीय है।

प्रमुख मनोवैज्ञानिक कहानियाँ: सेलर, दूध और दवा, सामान



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद की परंपरा 1918 ई० से 1936 ई० तक दिखाई पड़ती है। वस्तुत: अपने काव्यरूप में रहस्यवाद एवं सांस्कृतिक चेतना के उत्कृष्ट रूप के लिए छायावाद प्रसिद्ध है। इस रहस्यवाद का स्वरूप रीतिकालीन रहस्यवाद से पूर्णत: भिन्न है।

- पद्य में निहित चेतना को जनसामान्य तक पहुँचाना छायावाद का प्रमुख प्रतिपाद्य है। इसी आधार पर प्रभाव उत्पन्न करने हेतु भाषा में प्रतिकात्मकता संश्लिष्ट हुई।
- प्रतिकात्मक की अभिव्यक्ति हेतु छायावाद में अलंकारों का प्रयोग भी हुआ; परंतु ये काव्य को रोचक बनाने के उद्देश्य से नहीं निहित थे।
- वस्तुत: भावना का समावेशन करते हुए छायावाद में अर्थालंकारों का प्रयोग हुआ है, जिससे काव्य में लक्षणात्मकता आई है।
- छायावाद में मुख्यत: 3 प्रकार के अलंकारों का उद्भव हुआ।

(i) **मानवीकरण अलंकार:** प्रकृति एवं अन्य परिदृश्य को मानव सदृश प्रस्तुत किया है।

" ~~दिवसावसान~~ मेघमय आसमान से उतर रही / संध्या सुंदर परी सी / धीरे-धीरे-धीरे।"
— निराला

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) **ध्वन्यर्थ व्यंजना:** काव्य को प्रस्तुत इस तरह से प्रस्तुत किया जाए, जिससे ध्वनियों के प्रयोग से काव्य में प्रभाव उत्पन्न हो सके।

" झर-झर-झर निर्झर गिरी सर से"

(iii) **विशेषण-विपर्यय अलंकार:** विशेषण का प्रयोग स्वभाविक विशेष्य के ~~स्थान पर~~ साथ न करके, अस्वभाविक विशेष्य के साथ प्रयोग किया जाए।

उपर्युक्त अलंकारों से न केवल काव्यरूप में प्रतिकात्मकता और लक्षणात्मकता प्रदर्शित हुई है; अपितु ~~यह~~ अलंकार काव्य को उचित प्रवाह देने और समायोजित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

Gr1A 6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

हिंदी गद्य लेखन की विधा उपन्यास को एक विस्तृत परिदृश्य और विभिन्न आयामों को प्रदर्शित करने हेतु लिखा ~~जाता था~~ गया। इसके प्रमुख प्रकारों (जैसे - मनोवैज्ञानिक उपन्यास, आधुनिक उपन्यास, प्रगतिवादी उपन्यास) में से प्रगतिवादी उपन्यास मुख्यत: मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित है।

प्रगतिवादी उपन्यासकारों में यशपाल का नाम उल्लेखनीय है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं: दिव्या, झूठा सच आदि

→ प्रगतिवादी उपन्यासों में वर्ग संघर्ष की स्थिति को मुखरत: प्रदर्शित किया गया है।

→ इन उपन्यासों द्वारा गरीबों के अमीरों द्वारा शोषण को उजागर किया गया है। इस विचारधारा में शोषण का एकमात्र आधार आर्थिक बताया गया है।

→ प्रगतिवादी उपन्यास समाज की संरचना, व्यवस्था पर तीक्ष्ण कटाक्ष एवं व्यंग्य करते हैं।

→ धार्मिक आडंबरों के प्रति इन उपन्यासों


Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में पुरजोर विरोध की झलक दिखाई देती है।

→ प्रगतिवादी उपन्यासों का उद्देश्य वर्ग संघर्ष को प्रेरित करना है। इसी कारण कई उपन्यासों में उद्देश्य थोपा हुआ नज़र आता है।

→ इन उपन्यासों की भाषा बेहद सरल है और इसके पात्र गरीब व शोषित वर्ग को प्रदर्शित करते हैं।

→ यह विचारधारा आदर्शवाद का खंडन करती है तथा हृदय परिवर्तन को एक आडंबर मानती है।

प्रगतिवादी उपन्यास जनसामान्य तक प्रभावी पहुँच बनाने हेतु लिखे गए हैं। अत: इनकी भाषा शैली सरल और सहज और पात्र योजना शोषित वर्ग की प्रतिनिधि प्रतीत होती है।

यशपाल के कुछ प्रगतिवादी उपन्यास:
पार्टी कॉमरेड, दादा कॉमरेड.


Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने गीतगोविन्द को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।" इस मत के आलोक में विद्यापति-पदावली के पदों की मूल चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उक्त कथन विद्यापति-पदावली की काव्यात्मक समीक्षा करते हुए शुक्ल जी ने कहा है। वस्तुत: विद्यापति-पदावली को शुक्ल जी द्वारा आध्यात्मिक काव्य नहीं माना जाता, इसी मत का समर्थन अन्य आलोचकों (यथा: बच्चन सिंह, रामकुमार वर्मा, निराला) ने भी किया है।

→ वस्तुत: कुछ आलोचकों ने विद्यापति पदावली को भक्तिपरक माना है, तो कुछ आलोचकों ने शृंगारपरक।

शृंगारपरक काव्य

→ आचार्य शुक्ला के अनुसार विद्यापति-पदावली भक्तिपरक नहीं है, क्योंकि विद्यापति मूलत: शैव अनुयायी हैं और उन्होंने पदावली की रचना मूलत: शृंगार के उद्देश्य से की है।

→ इसी क्रम में निराला ने विद्यापति-


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पदावली को "नागिन की लहरों" के समान बताया है और इसके भक्तिपरक होने के मत का खण्डन किया है।

→ वस्तुत: रामकुमार वर्मा भी विद्यापति-पदावली को शृंगारपरक रचना मानते हुए कहते हैं कि "पदावली भक्ति परक न होकर वासना से युक्त काव्य है।"

→ इसी क्रम में विद्यापति-पदावली को डॉ. बच्चन सिंह द्वारा भी शृंगारिक रचना बताया गया है।

→ वस्तुत: विद्यापति-पदावली को शृंगारपरक काव्य बताने के पीछे निम्नलिखित तर्क हैं:

- अश्लीलता का वर्णन
- शैव अनुयायी द्वारा लिखित
- दरबारी लेखन युक्त (वस्तुत: कृष्ण व राधा तत्कालीन राजा व रानी के प्रतीक)

# इस मत से विभिन्न कुछ आलोचकों के अनुसार विद्यापति-पदावली मूलत: एक भक्तिपरक काव्य है, जिसके निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं:


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

- वर्तमान समय में भी कई मंदिरों में ये पद प्रचलित हैं।

- सूरदास द्वारा कृष्ण-राधा संयोगात्मक महाकाव्य को भक्तिपरक माना जा सकता है, तो विद्यापति-पदावली को क्यूँ नहीं?

→ सर्वप्रथम समर्थक जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार विद्यापति-पदावली में कृष्ण व राधा प्रतीक हैं, कृष्ण परमात्मा और राधा-जीवात्मा का तथा इस काव्य में जीवात्मा को परमात्मा से मिलने के प्रयासों को बताया गया है।

→ कुछ आलोचकों के अनुसार ~~यदि~~ यदि पदावली के कुछ हिस्सों को छोड़ दिया जाए, तो शेष हिस्सा कृष्ण एवं राधा के संयोगात्मक विवरण को अप्रतीम रूप से प्रस्तुत करता है।

वस्तुतः समग्रता से देखा जाए, तो सभी मत प्रामाणिक प्रतीत होते हैं। हालाँकि भक्तिकाव्य और श्रृंगार काव्य के मूलभाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

क्रमशः ईश्वर रति और रति में नाममात्र ही अंतर होता है और इनके सम्मिश्रण की संभावना होती है। इसी आधार पर इस रचना (विद्यापति-पदावली) को पूर्णतः भक्तिपरक या पूर्णतः श्रृंगारपरक कहना उचित नहीं होगा। अतः इस कसौटी पर इसकी भक्तिपरकता और श्रृंगारिकता का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

(ख) रीतिकालीन कवियों के आचार्यत्व पर विचार कीजिये। 15.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रीतिकाल की शुरुआत या प्रारंभ केशवदास से मानी जाती है। वस्तुतः रीतिकालीन काव्य भक्ति से हटकर दरबारी लेखन / शृंगार लेखन पर अत्यधिक महत्त्व देता है। इसको 4 भागों में बाँटा गया है।

(i) रीतिबद्ध काव्य
(ii) रीतिसिद्ध काव्य
(iii) रीतिमुक्त काव्य
(iv) रीतिइतर काव्य

मुख्यतः रीतिबद्ध काव्य में पहले संस्कृत के लक्षणों, सूत्रों का सरलीकरण / अनुवाद हिंदी में किया जाता था ; तत्पश्चात इन लक्षणों के आधार पर कविताएँ लिखी जाती थीं। इस परंपरा को लक्षण-ग्रंथ परंपरा भी कहा जाता था।

चूँकि ये कविताएँ प्रशासक वर्ग को इन लक्षणों को सिखाने के उद्देश्य से लिखी जाती रही ; अतः इन कवियों को आचार्य कवि भी कहा जाता है।

• हालाँकि रीतिकाल का आचार्यत्व गौण अथवा निम्न प्रकृति का है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ आचार्य का दायित्व होता है कि वह समाज अथवा लोगों के समक्ष कुछ नवीन संकल्पनाएँ या आयाम प्रस्तुत करे। इस उद्देश्य से रीतिबद्ध कवियों ने सिर्फ लक्षणों का अनुवाद ही किया है। यहाँ कोई नयापन नजर नहीं आता।

→ दूसरा आचार्यत्व का गुण होता है कि वे ऐसा कार्य करें कि लोग उनका अनुसरण करें ; परंतु इन कवियों ने काव्य लेखन सिर्फ दरबारी आस्था की दृष्टि से लिखा है और राजाओं का बढ़-चढ़कर अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है, जो धन प्राप्ति के उद्देश्य से प्रेरित था।

→ तीसरा गुण आचार्यत्व का यह होता है कि काव्य औदात्य एवं अनुग्राह्य हो ; परंतु इन कवियों ने शृंगार वर्णन इस प्रकार किया है कि उसमें अश्लीलता भी झलकती है।

→ आचार्यत्व की एक कसौटी और है कि जटिल लक्षणों / सूत्रों का सरलीकरण कर उसे समझने योग्य बनाया जा सके। इस आधार पर रीतिकालीन कवि आचार्यत्व


Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की कसौटी पर खरे उतरते हैं। वस्तुत: इन्होंने संस्कृत में उपलब्ध लक्षणों को सरल और सहज भाषा में अनुवादित किया और तत्पश्चात इन पर आधारित होकर काव्य रचना की।

हिंदी काव्य परंपरा में आचार्यत्व की यह अंतिम कसौटी अन्य की तुलना में प्रभावी नहीं बैठती। इसी आधार पर रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व निम्न कोटि का प्रतीत होता है, जो मुख्यत: दरबारी लेखन से प्रेरित था।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रासो काव्यों की भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

रासो काव्य हिंदी में प्रारंभिक स्तर पर लिखे गए काव्य हैं। प्रमुखत: पृथ्वीराज रासो हिंदी का पहला महाकाव्य ठहरता है।

→ वस्तुत: रासो काव्य को भाषा विभाजन के आधार पर 2 प्रकार से बाँट सकते हैं:

1. काव्य की भाषा के आधार पर
2. काव्य की प्रकृति के आधार पर

- पहले मतानुसार रासो काव्यों को प्रारंभ में प्राकृताभास अपभ्रंश में लिखा गया, जो अपभ्रंश थी; परंतु प्राकृत सदृश प्रतीत होती थी।

- दूसरा चरण उनका है जिन्हें आरंभिक अपभ्रंश माना जा सकता है।

  जैसे: संदेश रासक

- तीसरा चरण ~~परिवर्ती~~ परवर्ती अपभ्रंश अथवा परिनिष्ठित अपभ्रंश को माना गया।

  जैसे: बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइंस, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

• अंतिम ~~स्वरूप~~ चरण पुरानी हिन्दी सदृश भाषा को माना जा सकता है क्योंकि कहीं-कहीं इसका स्वरूप हिंदी सदृश मिलता है।

जैसे: परमाल रासो का यह उदाहरण:

"बारह बरस लौ कूकर जीवै, औ, तेरह बरस लौ जिये सियार।
अठारह बरस लौ क्षत्रिय जीवै, आगै जीवन को धिक्कार॥"

# दूसरे मतानुसार रासो काव्यों को डिंगल और पिंगल में बाँटा जा सकता है।

• वस्तुत: डिंगल में वीरता पूर्ण या वीर रस प्रधान रासो काव्यों को शामिल किया गया है।

जैसे: पृथ्वीराज रासो

• दूसरे वर्ग में पिंगल में शृंगार रस प्रधान रासो काव्यों को शामिल किया गया है।

जैसे: संदेश रासक


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वस्तुत: रासो काव्यों की रचना के विकास के साथ-साथ भाषिक परिवर्तन का विकास भी दिखता है, ~~किन्तु~~ साथ ही छंद वैविध्य और अलंकरण की दृष्टि से रासो काव्य महाकाव्यात्मक रूप में प्रतीत होते हैं। इसी आधार पर पृथ्वीराज रासो हिंदी का प्रथम महाकाव्य ठहरता है।

9/15


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भारतेन्दुयुगीन हिंदी नाटक पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिंदी नाट्य परंपरा के शिखर पुरुष रहे हैं। प्रसाद पूर्व युग नाट्य धारा को 2 भागों में बाँटा गया है।

(i) भारतेन्दु युगीन नाटक
(ii) द्विवेदी युगीन नाटक

भारतेन्दु युगीन नाट्य धारा के प्रमुख नाटककार भारतेन्दु हरिश्चंद्र रहे हैं। मुख्यतः भारतेन्दु ने नाट्य धारा के परंपरागत स्वरूप को तोड़ा। इन्होंने मनोरंजन के साथ-साथ जनजागरण एवं सांस्कृतिक-राष्ट्रीय चेतना के नाटक लिखे।

भारतेन्दुयुगीन नाटकों का मूल उद्देश्य जनता को राष्ट्रीयता का बोध कराना था। ~~इस~~ इन नाटकों का मूल उद्देश्य व्यावसायिक न होकर भारतीय जनमानस को वास्तविक परिस्थितियों से अवगत कराना था।

इस संदर्भ में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के कुछ नाटक, जैसे- ~~भारत दुर्दशा~~ भारत दुर्दशा, भारत जननी, सत्य हरिश्चंद्र इत्यादि हैं।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारतेंदु युगीन नाटकों की विशेषताएँ:

→ राष्ट्रीय चेतना का प्रसार प्रमुख उद्देश्य था। इसके कारण कहीं-कहीं पात्र विवश प्रतीत होते हैं।

→ काव्य ~~भाषा~~ शैली का प्रयोग किया गया है, जिससे नाटक का प्रवाह बना रहे।

~~यथा~~: "रोवहु सब मिलिके आवहु भारत भाई,
हा! हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई।"

→ मुख्य या केंद्रीय चरित्र धीरोदात्त नायक न होकर त्रस्त, विवश, लाचार नायक का वर्णन मिलता है।

जैसे: भारत दुर्दशा में भारत का चरित्र

→ संवाद चुस्त और प्रवाहशील प्रतीत होते हैं। साथ ही इनमें जन-चेतना हेतु कुछ तत्व भी सम्मिलित होते हैं।

→ सत्य हरिश्चंद्र जैसे नाटकों का कथानक प्राचीन इतिहास की कल्पना की उपज है, जो वर्तमान समय में स्थित विसंगतियों को इंगित करता है।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ अंग्रेजी शासन के प्रति भारतीय जनमानस के विरोध का भाव कराने हेतु ये नाटक लिखे जा रहे थे।

→ औद्योगीकरण से उत्पन्न हुई नीरसता और विसंगतियों को दूर करना भी इन नाटकों का एक पक्ष था।

→ इस समय काफी मात्रा में प्रहसन भी लिखे गए।

जैसे: वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति (भारतेन्दु)

बूढ़े मुँह मुहासे (राधाचरण गोस्वामी)

→ प्रहसन नाटकों के माध्यम से धर्म और समाज में व्याप्त आडंबरों, विसंगतियों, रूढ़ियों पर व्यंग्य / कटाक्ष किया गया है।

→ भारतेंदुयुगीन नाटक रंगमंच की दृष्टि से अत्यधिक सफल हैं। कई नाटकों में अधिकतर पात्र नेपथ्य से बोलते हुए प्रतीत होते हैं।

इन नाटकों को नुक्कड़ नाटकों की तरह खेला भी जा सकता है।



दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

→ नाटकों को गद्य और पद्य की मिश्रित शैली में लिखा गया है; ताकि गति और प्रवाह बना रहे।

→ भारतेन्दुयुगीन नाटक पाश्चात्य नाटकों से भिन्न दिखाई पड़ते हैं; परंतु भारतेंदु के नाटक नीलदेवी में अंत त्रासद दिखाई पड़ता है, जो पाश्चात्य नाट्य शैली का अंश है।

हालाँकि भारतेन्दुयुगीन नाटक सोद्देश्य प्रतीत होते हैं; परंतु कथानक, शिल्प, भाषा-शैली, रंगमंच और नाटकीयता की दृष्टि से बेहद सरल और सहज प्रतीत होते हैं। इसी कारण इन नाटकों ने न केवल राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया; अपितु पारसी थियेटर को हटाकर अपनी ग्राह्यता व्यापक की।

G+E 12/20



दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Scanned with OKEN Scanner

(ख) देश-विभाजन के संदर्भ में यशपाल के उपन्यास 'झूठा सच' का अनुशीलन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यशपाल एक मार्क्सवादी विचारधारा के उपन्यासकार हैं। साथ ही वे वर्ग संघर्ष को मूल कारण आर्थिक मानते हैं। उनके कई उपन्यासों (जैसे: दिव्या, झूठा सच आदि) से मार्क्सवाद स्पष्टतः झलकता है।

झूठा सच यशपाल का एक प्रसिद्ध उपन्यास है, जो देश-विभाजन की त्रासदी पर लिखा गया है।

- मुख्यतः झूठा सच को दो भागों में विभक्त किया गया है।
  1. वतन और देश
  2. देश का भविष्य
- इस उपन्यास में कुछ पात्रों (जैसे- सूद) के माध्यम से राजनीति और पत्रकारिता में निहित भ्रष्टाचार का उल्लेख किया गया है।
- यशपाल के इस उपन्यास के अनुसार देश विभाजन हेतु अंग्रेजी हुकूमत को जबाबदेह बताया गया है। साथ ही राजनीतिक परिदृश्य से निष्क्रियता और शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है।


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

- कुछ पात्रों (जैसे - तारा) के माध्यम से अपने कर्तव्य के प्रति कर्तव्यपरायणता को भी दर्शाया गया है।
- झूठा सच उपन्यास मुख्यतः देश-विभाजन से उत्पन्न परिदृश्य को चित्रित करता है।
- उपन्यास में पात्रों के माध्यम से संत्रास, संबंधों में बिखराव, मध्यमवर्गीय अकेलापन आदि को दर्शाया गया है; परंतु यह तत्व गौणतः प्रतीत होता है।

वस्तुतः उपन्यास के माध्यम से सन् 1942 से 1952 के मध्य के राजनीतिक - सामाजिक - आर्थिक परिदृश्य को मुख्यतः उकेरा गया है।

- निम्नवर्गीय परिवारों में विभाजन त्रासदी से उत्पन्न समस्या, आवास छिनने की समस्या, शोषण की समस्या के साथ शासन और व्यवस्था में उत्पन्न हो रही भ्रष्टाचार, निष्क्रियता, अवसरवादिता जैसी समस्याओं का जीवंत वर्णन झूठा


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सच का प्रतिपाद्य है।

- यशपाल के अनुसार देश विभाजन त्रासदी का सबसे अधिक नुकसान गरीब, असहाय वर्ग को हुआ है; अमीर वर्ग प्रायः इससे अप्रभावित रहा है।

यशपाल द्वारा लिखित यह उपन्यास संपूर्ण तत्कालीन परिस्थितियों को आत्मसात करे हुए प्रतीत होता है। इसी आधार पर यह देश-विभाजन के संदर्भ में महाकाव्य सदृश ठहरता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामचंद्रिका की संवाद-योजना पर प्रकाश डालिए। 15

रीतिकालीन काव्यधारा के प्रवर्तक केशवदास ने रामचंद्रिका की रचना की, जो मुख्यतः राम के कथानक पर आधारित है। वस्तुतः यह एक छोटी रचना है, अतः इसका प्रसार व्यापक तौर पर नहीं हो पाया। कुछ

→ रामचंद्रिका में घटनाओं का वर्णन अतिसूक्ष्म रूप में दिया हुआ है, जो किसी भी आधार पर रामचरित मानस की बराबरी नहीं कर सकता।

परंतु रामचंद्रिका की संवाद-योजना इतनी प्रभावी और चुस्त है कि किसी अन्य रचना में यह संभव नहीं।

→ संवाद दृष्टि से बड़े प्रसंगों को एक वाक्य में पिरोकर रख दिया गया है, जो अपने आप में अद्भुत एवं मौलिक है।

यथा→ राम वन गमन, दशरथ मृत्यु (पुत्र वियोग में) को एक पंक्ति द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

"मातु गए नृपतात, कहाँ? सुरलोकहिं, क्यों? सुत शोक लिए।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ संवाद योजना की दृष्टि से रामचंद्रिका के संदर्भ में आचार्य शुक्ल ने कहा कि " रावण-अंगद संवाद यहाँ इस प्रकार प्रभावी रूप से व्यक्त हुआ है, जिसकी बराबरी रामचरित-मानस भी नहीं कर सकती।"

→ केशवदास द्वारा घटनाओं का वर्णन महज़ सामान्य ढंग से किया हो; परंतु संवाद योजना अत्यधिक प्रवाह पूर्ण है।

→ संबंध निर्वाह की कमी और मार्मिक स्थलों की अव्यवस्थित मौजूदगी के उपरांत भी संवाद योजना उचित प्रवाहपूर्ण, उपयुक्त गति, विराम धारण किए हुए प्रतीत होती है।

→ चूँकि केशव संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। अतः संस्कृत / भाषायी अभिजात्यता के प्रति उनका लगाव विशेषतः था; जिसकी झलक उनकी काव्य रचना यथा- रामचंद्रिका में भी दिखी।

इसी आधार पर कुछ मौलिक प्रयोग उन्होंने किए, जिसका एक प्रमाण रामचंद्रिका की संवाद योजना है।


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ रामचंद्रिका में गागर में सागर भरने की अभिव्यक्ति संवाद योजना में हुई है।

→ वस्तुतः रामचंद्रिका के कथानक का विकास संवाद - योजनाओं के आधार पर ही हुआ है। इस संवाद योजना में वक्रोक्ति का प्रयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है।

→ रामचंद्रिका में संवाद योजना के माध्यम से बिंबात्मकता की अभिव्यक्ति स्पष्टतः होती है, जो रीतिकाल की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर यह प्रतीत होता है कि रामचंद्रिका की संवाद - योजना न केवल रीतिकाल अपितु अब तक की सभी रचनाओं में अद्वितीय है और इसी प्रवाहपूर्ण, तीव्र संवाद - योजना के कारण ही रामचंद्रिका उल्लेखनीय है।

9/15


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रीतिकाल के प्रवर्तक केशवदास को रीतिबद्ध काव्य या लक्षण-ग्रंथ परंपरा का शीर्ष कवि माना जाता है। जिनकी प्रमुख रचनाएँ रामचंद्रिका, विज्ञानगीता, जहाँगीरजसचंद्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया हैं।

→ केशवदास ने अपने काव्य में विभिन्न गुणों/दृष्टियों का समावेशन किया है।

यथा: विज्ञानगीता → दर्शन विज्ञान

जहाँगीरजसचंद्रिका → इतिहास

कविप्रिया, रसिकप्रिया → आचार्यत्व

इस आधार पर इन्हें कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।

→ केशव को मूलत: अपनी काव्य की शिल्प दृष्टि और भाषा के आधार पर मूलत: कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है। क्योंकि इन्होंने अपूर्ण वाक्य, फालतू शब्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है, जिससे इसकी अर्थग्राह्यता जटिल हो जाती है।

→ केशव ने कई स्थानों पर अलंकारों का प्रयोग भी भाषागत / शिल्पगत चमत्कार



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उत्पन्न करने के लिए किया है।

→ केशव के काव्यों में एक समस्या छंद योजना भी है, जिसे रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'छंदों का अजायबघर' भी कहा है।

→ आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "केशव एक प्रकाण्ड संस्कृत विद्वान थे, जो भाषा को अपने ज्ञान के माध्यम से चमत्कारिक बना देना चाहते थे; परंतु उन्हें काव्य भाषा की जानकारी नहीं थी।"

हालाँकि केशव के इस गुण के पीछे तत्कालीन परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार हैं। वस्तुत: वे संस्कृत के विद्वान थे। इस कारण इनमें भाषायी अभिजात्यता के प्रति मोह था और इनको बिहारी आदि की तरह भाषायी व काव्य परंपरा बनी-बनाई ~~मिली~~ नहीं मिली; इन्होंने स्वयं उसका निर्माण किया; परिणामत: केशव के काव्य ~~अ~~ अपेक्षाकृत जटिल हुए।

G.A 6/10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) विद्यापति की राधा

हिंदी साहित्य में नारी चरित्रों में राधा का चरित्र अतिमहत्त्वपूर्ण रहा है। इसकी प्रमुखता से वर्णन जयदेव कृत गीत गोविंद से मिलता है। वस्तुतः पदावली (विद्यापति कृत) में राधा का वर्णन विस्तृत रूप में मिलता है, क्योंकि विद्यापति ने राधा को कृष्ण के बराबर और कहीं-कहीं अधिक महत्त्व भी दिया है।

→ विद्यापति की मीरा विश्व के सौंदर्यतत्व के रूप में उपस्थित है। उसका मुख स्वर्ण कमल की भाँति, देह कनक वल्लरी, नयन भाव-भंगिमायुक्त हैं। वह जब चलती है तो कमल झरते हैं।

" जहँ जहँ पग जुग धारई, × × × × "

→ विद्यापति की राधा के सौंदर्य को देखकर कृष्ण विकल हो उठे थे।

→ राधा केवल शारीरिक रूप से ही नहीं, अपितु मानसिक रूप से भी सौंदर्यता से



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

युक्त है। वह कृष्ण के प्रति प्रतिबद्ध है और उसे जीवन भर देखते रहना चाहती है।

" जनम अवधि भर रूप निहारल,
नयन न तिरपित भेल।"

→ विद्यापति की राधा का वियोग सूर की तुलना में अधिक व्याकुल कर देने वाला प्रतीत होता है।

" राहि रहल दूर हम मधुरापुर,
एतउ सहए परान।"

इस प्रकार विद्यापति की राधा एक किशोरी के सदृश ठहरती है, जिसकी चंचलता, हठ आदि ~~प्रासंगिक~~ व्यावहारिकता उत्पन्न करते हैं।

इस प्रकार विद्यापति ने संस्कृत और बंगाल की राधा को हिंदी की राधा के रूप में स्थापित कर दिया।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्य साहित्य लेखन की परंपरा में सर्वप्रथम नाभादास का नाम लिया जाता है। वस्तुत: इन्होंने अपनी रचना भक्तमाल में लगभग २०० कवियों के बारे में लिखा है।

→ हिंदी के इतिहास लेखन का नाभादास द्वारा किया गया प्रयास हालाँकि पूर्णत: प्रामाणिक नहीं है; फिर भी कवियों के जीवन-चरित्र लेखन का प्रारंभ भक्तमाल से ही माना जाता है।

→ वस्तुत: इन्होंने संत पीपा, धन्ना, रैदास, मीरा आदि के बारे में भक्तमाल में लिखा है।

→ कई प्रसंगों में कवियों की अलौकिक घटनाओं का भी वर्णन किया है, ताकि लोगों के मन में आदर्श एवं सम्मान का भाव प्रेरित हो सके।

→ इस ग्रंथ में कवियों के काल संबंधी प्रमाणों का पूर्णत: अभाव है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ वस्तुत: भक्तमाल काव्यात्मक ग्रंथों के बारे में वर्णन करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि नाभादास द्वारा कृत भक्तमाल भले ही तथ्यों और कालक्रम के अनुसार महत्वपूर्ण न हो; परन्तु नाभादास की यह कृति हिंदी साहित्य लेखन का सूत्रपात करती है।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल में रामभक्ति काव्यधारा के शीर्ष कवि रहते हैं। इसी संदर्भ में तुलसीदास ने रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली जैसी राम-भक्ति परक रचनाओं की रचना की।

→ वस्तुतः तुलसी की रचनाएँ अधिकतर प्रबंधकाव्य हैं और साथ ही भक्तिभाव से प्रेरित हैं।

→ भक्ति के साथ-साथ समाज की विद्रूपताओं, विसंगतियों, मूल्यों में कमी को भी तुलसी ने अपने काव्यों में व्यक्त किया है।

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी,
जीविकाविहीन लोग, सिद्यमान सोचबस,
कहैं एक एकन सों, कहाँ जाई का करी।।"

वस्तुतः 'विनयपत्रिका' का अर्थ होता है अरजी या 'प्रार्थनापत्र'। इस आधार पर यह रचना प्रार्थना करने के स्वरूप में भक्ति भाव से


Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेरित होकर लिखी गई है।

→ विनयपत्रिका में समकालीन परिस्थितियों, राजनीतिक विसंगतियों, समाज में व्याप्त समस्याओं के बारे में उल्लेख किया गया है।

जैसे- "शतरंज को सो राज ~~काज~~, काठ सो सबै समाज"

→ इस रचना में 7 ड्योढ़ियाँ हैं; तत्पश्चात् दो जंगल हैं और फिर राम का राजमहल है। जहाँ लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जानकी माता से अरजी कर रहे हैं।

→ वस्तुतः इस रचना में तुलसी ने दास्य भक्ति स्वरूप अपने समय की समस्याओं को दूर करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की है।

→ तुलसीदास ने यह प्रार्थना स्वयं न करके सभी समाज द्वारा व्यक्त की है और यह दुःख और समस्याएँ भी तुलसी की अपनी न होकर संपूर्ण समाज की हैं, जो तत्कालीन समाज के स्वरूप को मूर्त रूप में प्रस्तुत करती है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका अपेक्षाकृत एक छोटी रचना है जो दास्य भक्ति भाव से प्रेरित है। चूँकि तुलसीदास ने अपने समय की विसंगतियों का लगभग सभी काव्यों में वर्णन किया है। अतः यहाँ भी यह दर्शनीय है।

→ ~~हालाँकि तुलसीदास की इस रचना में भी वर्गों के मूल्यों के पतन को उद्घाटित किया गया है, जो वस्तुतः ब्राह्मण वर्ग द्वारा पारंपरिक मूल्य नहीं अपनाने और भक्ति से अलग रहने पर कटाक्ष करता है।~~

→ तुलसीदास ने इस रचना में, जो प्रार्थना या अरजी की है, वह मानो संपूर्ण समाज (पीड़ित समाज) की अरजी के रूप में उभर गई है और संपूर्ण समग्रता लिए हुए व्यक्त हुई है।

→ कुछ प्रसंगों (यथा: चित्रकूट वर्णन) को यथास्थान प्रस्तुत किया गया है।

→ विनयपत्रिका मूलतः तुलसी की व्यथा न होकर संपूर्ण समाज की व्यथा का



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रस्तुतीकरण है।

→ यह रचना प्रपत्तिभाव से लिखी गई है, जिसका तात्पर्य होता है दास या पीड़ित वर्ग द्वारा की गई भक्ति या अराधना।

संपूर्ण रूप से विनयपत्रिका में भी तुलसी का भाव दास्य भक्ति भाव ही रहा है और यहाँ ईश्वर से (अर्थात् श्रीराम से) यह प्रार्थना की गई है कि 'इन विसंगतियों से समाज की रक्षा करो' और समाज को समतामूलक बनाओ, जहाँ किसी प्रकार का दुख न हो।

"दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
राम राज्य काहिहु नहिं व्यापा।।"

12/20

Scanned with OKEN Scanner

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रीतिकाव्य लेखन दरबारी लेखन के तौर पर वस्तुत: जाना जाता है। अधिकांश काव्य लेखन दरबारी परंपरायुक्त है और धन प्राप्ति के उद्देश्य से लिखा गया है।

चूँकि ललित कला से आशय मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति और आत्मिक सुख प्राप्ति से है। इसी आधार पर ये काव्य रूप भी ~~इसी~~ दिशा में विकसित हुए।

→ 16 वीं सदी के पश्चात् मुगल काल में जहाँगीर, शाहजहाँ जैसे शासक हुए, जो ललितकला के विकास हेतु स्वर्णिम युग के सूचक थे। इस समय चित्रकला में स्वर्णिम रंगों का प्रचलन बढ़ रहा था, जिसका प्रभाव काव्य लेखन में देखा जा सकता है।

" अंग अंग जग नगमति, दीपशिखा सी देह।
दिया बुझाए है रहो, बढ़ो उजेरो गेह ॥"

यह पूर्णत: तत्कालीन ललित कलाओं से प्रेरित है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

→ सल्तनतकाल में संगीत को इतना प्रसार नहीं मिला; परंतु रीतिकाल के समय संगीत की हिंदुस्तानी शैली का विकास हुआ, जिसके आधार पर काव्य लेखन में भी ध्वन्यात्मकता, नादात्मकता और लय आने लगी। मूलत: मात्राओं और विराम, प्रवाह का प्रयोग इसी रूप में किया जाने लगा।

" भरि रही / तनक-~~तनक~~ तनक / तार तुरिन की"

→ रीतिकालीन समय में चित्रकला की शैलियों कांगड़ा शैली और राजस्थानी शैली का विकास हुआ, जिसके आधार पर राजस्थान में ~~राग~~ रागमाला चित्र बनाए गए। परंतु ये चित्र राजस्थान में न सीमित रहकर संपूर्ण भारत में प्रसारित हुए, जो वस्तुत: एक ही प्रकार की रागात्मकता के प्रयुक्त होने के कारण हुआ। वस्तुत: जिनको काव्य की समझ थी, उनमें एक ही प्रवृत्ति के काव्य के प्रति समान दृष्टि का विकास हुआ।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ रीतिकाल में स्थानीय लोकगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्यों का भी आरंभ हुआ; जिनका प्रभाव भी रीतिकालीन काव्य में देखा जा सकता है और इसी आधार पर रीतिकालीन काव्यों में सौंदर्य गुण व्यापक होने लगा।

साथ ही इन्हीं स्थानीय कलाओं के कारण कई काव्यों में नायक-नायिका भी सामान्य नर-नारी हैं, जो भाव-भंगिमाओं को प्रदर्शित करते हैं।

"कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात, भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात।"

वस्तुतः रीतिकालीन काव्य में बिंबात्मकता, नाद व्यवस्था, संगीतात्मकता इत्यादि गुणों का विकास तत्कालीन ललित कलाओं से विकसित हुआ है और इसी कारण रीतिकालीन काव्य व्यापक रूप पर ग्राह्य हुआ।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भीष्म साहनी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

उपन्यास लेखन कला में सामाजिक चेतना एवं यथार्थ को प्रदर्शित करने में भीष्म साहनी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्रमुखतः इस शैली में न तो प्रगतिवादियों की तरह पूर्णतः वर्ग संघर्ष को दर्शाया गया है और न ही मनोविज्ञान-वादियों की तरह पूर्णतः आत्म चिंतन। यह लेखन धारा समाज को यथार्थ रूप में प्रदर्शित करना चाहती है।

→ इसी आधार पर भीष्म साहनी के कुछ उपन्यास प्रमुख हैं। जैसे: तमस, झरोखे

* भीष्म साहनी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना:

→ 60 के दशक में आते-आते आजादी से मोहभंग होने लगा था। वस्तुतः मध्यवर्गीय स्वरूप के आधार पर लेखन हुआ। यह सामाजिक संरचना के बिखराव, संबंधों की टूटन को समाहित किए हुए था।

→ कुछ उपन्यासों में महिलाओं की समाज



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में स्थिति का सदृश्य वर्णन किया गया है, जहाँ महिला को प्राय: वस्तु सदृश्य माना जाता था।

→ कुछ उपन्यासों में वर्तमान परिदृश्य में उत्पन्न हो रही सांप्रदायिकता का जीवंत वर्णन किया गया है (जैसे- तमस)।

→ साथ ही शासन की निष्क्रियता एवं भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं को भी निरुपित किया गया है।

→ सामाजिक रूढ़िवादिता, ~~कुलवादी~~ पुरुषवादी मानसिकता का यथार्थपरकता से चित्रण किया गया है।

→ समाज, शासन, व्यवस्था में निहित समस्याओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

→ कुछ उपन्यासों में नैतिक प्रतिमानों की आड़ में हो रहे शोषण को भी यथार्थ रूप में प्रदर्शित किया है।

→ भीष्म साहनी कृत तमस उपन्यास समाज के खोखलेपन को पूर्णरूपेण प्रदर्शित करता है और सांप्रदायिकता



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइंस, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जैसी समस्याओं को प्रदर्शित करते हुए समाज पर इसके प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

→ ~~उपन्या~~ उपन्यासों में केंद्रीय चरित्र को न तो औदात्यपूर्ण बनाया है और न ही असहाय; परंतु आम आदमी को पटल पर प्रदर्शित कर दिया है।

→ सामाजिक - राजनीतिक - आर्थिक विद्रूपताओं को यथार्थ रूप में प्रदर्शित किया है।

भीष्म साहनी किसी भी संदर्भ में अतिवादी होने से बचे हैं, तो साथ ही उनका उद्देश्य बस समाज को यथार्थ रूप में प्रदर्शित कर देने से है, जो सामाजिक खोखलेपन को मुखर तौर पर प्रदर्शित करने में सहायक है।

Good 9 (1)

Scanned with OKEN Scanner